Dr Manoj Kumar Sah
Deptt of Pol-Sci

अन्तर - अनुशासनात्मक दृष्टिकोण

किसी भी विषय की सफलता उसके स्वतंत्र अनुशासन के रूप में मान्यता पर निर्भर करती है एक स्वतंत्र अनुशासन के रूप में मान्यता पर निर्भर करती है। एक स्वतंत्र अनुशासन के अस्तित्व के लिए यह आवश्यक है कि उसका विषय-क्षेत्र स्पष्ट एवं निश्चित हो। उसकी अपनी अध्ययन पद्धति हो या उसके पास नये-नये क्षेत्रों में शोध सम्भावनाएँ हो। वह एक अनुभवात्मक, विकसित तथा रचनात्मक सिद्धान्त से संचालित होता हो। राजनीतिशास्त्र एक ऐसा ही अनुशासन है जो अपनी पहचान की खोज में लगा है। अब राजनीतिशास्त्र एक स्वायत्त एवं स्वतंत्र अनुशासन के रूप में विकसित होने लगा है।

फिर भी, यह कहना गलत होगा कि अन्य सामाजिक विज्ञानों से सम्बन्ध स्थापित किये बिना ही राजनीतिशास्त्र ने आज इतना विकास कर लिया है। सिजविक ने भी कहा है कि यदि हमें किसी विषय या विज्ञान का अन्वेषण करना है तो यह अत्यन्त लाभदायक होगा कि हम उस विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध मालूम करें, फिर यह जानने का प्रयास करें कि उक्त विषय ने अन्य विषयों से क्या लिया है और उसने स्वयं अन्य विषयों को क्या दिया है। सिजविक की इस उक्ति से राजनीतिशास्त्र के अन्तर अनुशासनात्मक दृष्टिकोण का आभास मिल जाता है। गार्नर ने कहा है कि हम इसके सहायक विज्ञानों का यथावत् ज्ञान प्राप्त किये बिना राज्य-विज्ञान एवं राज्य का पूर्ण ज्ञान ठीक उसी प्रकार प्राप्त नहीं कर सकते जिस प्रकार गणित के बिना यन्त्र विज्ञान और रसायनशास्त्र के बिना जीव विज्ञान का यथावत् ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। पोलक ने भी कहा है कि राजनीतिशास्त्र का अन्य शास्त्रों से गहरा सम्बन्ध है इसे ही अन्तर अनुशासनात्मक दृष्टिकोण कहते हैं।

Scanned with CamScanner